आरती
श्री ब्रह्मा, विष्णु, महेश

जय शिव ओंकारा, भज जय शिव ओंकारा।
ब्रह्मा विष्णु सदाशिव, अर्द्धंगी धारा॥
ओ३म् हर हर महादेव!

एकानन चतुरानन पंचानन राजे।
हंसानन गरूड़ासन वृषवाहन साजे॥ ॐ हर हर...

दो भुज चारु चतुर्भुज दश भुज अति सोहे।
तीनों रूप निरखते, त्रिभुवन-जन मोहे॥ ॐ हर हर...

अक्षमाला वनमाला रूण्डमाला धारी।
त्रिपुरारी कंसारी करमाला धारी॥ ॐ हर हर...

श्वेताम्बर पीताम्बर बाघाम्बर अंगे।
सनकादिक गरूड़ादिक भूतादिक संगे॥ ॐ हर हर...

कर मध्ये सुकमण्डलु चक्र शूल धारी।
सुखकारी दुखहारी जग-पालन कारी॥ ॐ हर हर...

ब्रह्मा विष्णु सदाशिव जानत अविवेका।
प्रणवाक्षर में शोभित ये तीनों एका॥ ॐ हर हर..

त्रिगुण स्वामि की आरती जो कोई नर गावे।
कहत शिवानन्द स्वामी मनवांछित फल पावे॥ ॐ हर हर...
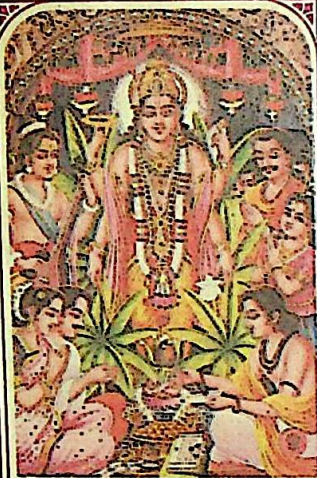
आरती श्री सत्यनारायणजी

जय लक्ष्मी रमणा, श्री लक्ष्मी रमणा।
सत्यनारायण स्वामी, जन-पातक-हरणा॥

रत्न जटित सिंहासन, अद्‌भुत छवि राजे।
नारद करत निराजन, घंटा ध्वनि बाजे॥ जय...

प्रकट भये कलि कारण, द्विज को दरस दियो।
बूढ़े ब्राह्मण बनकर, कंचन-महल कियो॥ जय...

दुर्बल भील कठारो, जिनपर कृपा करी।
चन्द्रचूड़ एक राजा, जिनकी विपति हरी॥ जय...

वैश्य मनोरथ पायो, श्रद्धा तज दीन्हीं।
सो फल भोग्यो प्रभुजी, फिर अस्तुति कीन्हीं॥ जय...

भाव-भक्ति के कारण, छिन-छिन रूप धर्‌यो।
श्रद्धा धारण कीनी, तिनको काज सर्‌यो॥ जय..

ग्वाल-बाल सँग राजा, वन में भक्ति करी।
मनवांछित फल दीन्हों, दीनदयालु हरी॥ जय...

चढ़त प्रसाद सवायो, कदली फल मेवा।
धूप दीप तुलसी से, राजी सत्यदेवा॥ जय..

श्री सत्यनारायण जी की आरती जो गावे।
तन-मन सुख-सम्पति, मन-वाञ्छित फल पावे॥ जय...

आरती
श्री लक्ष्मीजी

ओ३म् जय लक्ष्मी माता, मैया जय लक्ष्मी माता।
तुमको निसिदिन सेवत, हर विष्णु धाता॥

उमा, रमा, ब्रह्माणी, तुम ही जग-माता।
सूर्य – चन्द्रमा ध्यावत, नारद ऋषि गाता॥ ओ३म्...

दुर्गा रूप निरंजनि, सुख-सम्पत्ति दाता।
जो कोई तुमको ध्यावत, ऋद्धि-सिद्धि धन पाता॥ ओ३म्...

तुम पाताल–निवासिनि, तुम ही शुभदाता।
कर्म-प्रभाव-प्रकाशिनि, भवनिधि की त्राता॥ ओ३म्...

जिस घर में तुम रहती, सब सद्गुण आता।
सब सम्भव हो जाता, मन नहीं घबराता॥ ओ३म्...

तुम विन यज्ञ न होते, वस्त्र न हो पाता।
खान-पान का वैभव, सब तुमसे आता॥ ओ३म्

शुभ-गुण मंदिर सुन्दर, क्षीरोदधि-जाता।
रत्न चतुर्दश तुम विन, कोई नहीं पाता॥ ओ३म्...

महालक्ष्मीजी की आरती, जो कोई जन गाता।
उर आनन्द समाता, पाप उतर जाता॥ ओ३म्...

—: श्री लक्ष्मी-वन्दना :—

महालक्ष्मि नमस्तुभ्यं नमस्तुभ्यं सुरेश्वरि।
हरिप्रिये नमस्तुभ्यं नमस्तुभ्यं दयानिधे॥
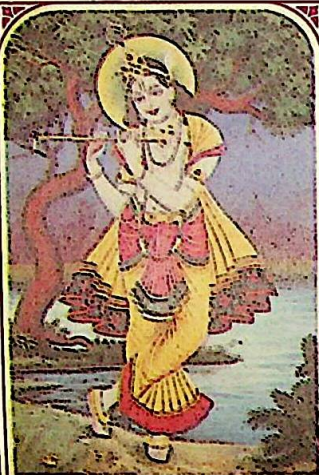
आरती श्री कृष्णजी

जय श्री कृष्ण हरे, प्रभू जय जय गिरधारी ।
दानव-दल बलिहारी, गो-द्विज हितकारी॥

जय गोविन्द दयानिधि, गोवर्धन धारी ।
वंशीधर बनवारी, ब्रज-जन प्रियकारी॥ जय श्री...

गणिका गीध अजामिल गजपति भयहारी ।
आरत-आरति हारी, जय मंगल कारी॥ जय श्री...

गोपालक गोपेश्वर, द्रौपदि दुखदारी ।
शवर-सुता सुखकारी, गौतम-तिय तारी॥ जय श्री...

जन प्रह्लाद प्रमोदक, नरहरि तनु धारी ।
जन मन रञ्जनकारी, दिति-सुत संहारी॥ जय श्री...

टिटि्टभ-सुत संरक्षक, रक्षक मंझारी ।
पाण्डु सुवन शुभकारी, कौरव मद हारी॥ जय श्री...

मन्मथ-मन्मथ मोहन, मुरली-रव कारी ।
वृन्दाविपिन विहारी, यमुना तट चारी॥ जय श्री...

अघ-बक-बकी उधारक, तृणावर्त तारी ।
विधि-सुरपति मदहारी, कंस मुक्तिकारी॥ जय श्री...

शेष, महेश, सरस्वति, गुन गावत हारी ।
कल कीरति विस्तारी, भक्त भीति हारी॥ जय श्री...

नारायण शरणागत, अति अघ अघहारी ।
पद-रज पावनकारी, चाहत चितहारी॥ जय श्री...
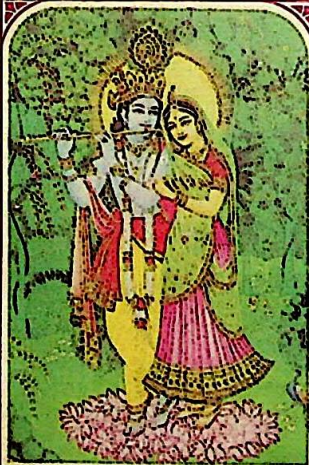
आरती श्री राधा-कृष्णजी

आरती जुगलकिशोर की कीजै।
तन मन धन न्योछावर कीजै॥

गौर श्याम मुख निरखन कीजै।
प्रेम स्वरूप नयन भर पीजै॥ आरती...

रवि शशि कोटि वदन की शोभा।
ताहि देखि मेरो मन लोभा॥ आरती...

मोर मुकुट कर मुरली सोहै।
नटवर वेष निरख मन मोहै॥ आरती...

ओढ़ें पीत नील-पट सारी।
कुंजन ललना लालबिहारी॥ आरती...

श्री पुरुषोत्तम गिरिवरधारी।
आरती करत सकल ब्रजनारी॥ आरती...

नँदनंदन वृषभानु किशोरी।
परमानँद प्रभु अविचल जोरी॥ आरती...

—: श्री कृष्ण-वन्दन :—

वन्दे नवघनश्यामं पीतकौशेयवाससम्।
सानन्दं सुन्दरं शुद्धं श्रीकृष्णं प्रकृतेः परम्॥

—: श्री राधिका-वन्दन :—

ब्रजराजकुमारवल्लभा कुलसीमन्तमणि प्रसीद मे।
परिवारगणस्य ते यथा पदवी मे न दवीयसी भवेत्॥
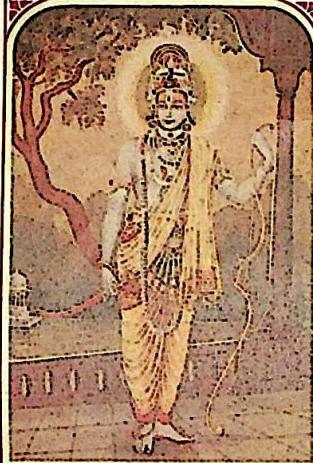
श्री रामचन्द्र कृपालु भजु मन, हरण भव भय दारुणम्।
नवकंज लोचन, कंज-मुख कर-कंज पद-कंजारुणम्॥

कंदर्प अगणित अमित छवि, नवनील-नीरद-सुन्दरम्।
पटपीत मानहु तड़ित रुचि सुचि नौमी जनक सुता-वरम्॥

भजु दीनबंधु दिनेश दानव - दैत्यवंश - निकंदनम्।
रघुनंद आनंदकंद कौशलचन्द्र दशरथ - नंदनम्॥

सिर मुकुट कुंडल तिलक चारु उदार अंग विभूपणम्।
आजानुभुज शर-चाप-धर संग्राम-जित-खर-दूषणम्॥

इति वदति तुलसीदास शंकर-शेष-मुनि-मन-रंजनम्।
मम हृदय कंज निवास कुरु कामादि-खल-दल-गंजनम्॥

आरती कीजै श्री रघुवरजी की।
सत चित आनन्द शिव सुन्दर की॥

दशरथ-तनय कौसिला-नन्दन, सुर-मुनि-रक्षक दैत्य-निकन्दन।
अनुगत-भक्त भक्त-उर-चन्दन, मर्यादा-पुरुषोत्तम वरकी॥

निर्गुन-सगुन अरूप-रूपनिधि, सकल लोक-वन्दित विभिन्न विधि।
हरण शोक-भय, दायक सब सिधि, मायारहित दिव्य नर-वरकी॥

जानकिपति सुराधिपति जगपति, अखिल लोक पालक त्रिलोक गति।
विश्ववन्द्य अनवद्य अमित-मति, एकमात्र गति सचराचर की॥

शरणागत-वत्सल-व्रतधारी, भक्त-कल्पतरु-वर असुरारी।
नाम लेत जग पावनकारी, वानर-सखा दीन-दुख हरकी॥
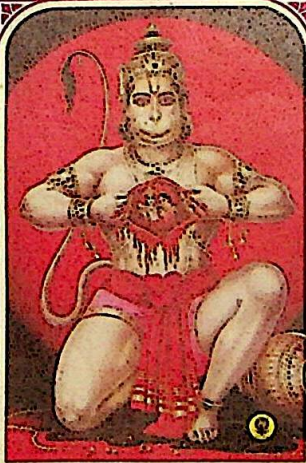
आरती श्री रामचन्द्रजी

आरती
श्री हनुमानजी

आरती कीजै हनुमान लला की।
दुष्ट दलन रघुनाथ कला की॥

जाके बल से गिरिवर काँपे। रोग दोष जाके निकट न झाँपै॥ आरती...
अंजनि पुत्र महा बलदाई। सन्तन के प्रभु सदा सहाई॥ आरती...
दे बीरा रघुनाथ पठाये। लंका जारि सीय सुधि लाये॥ आरती...
लंका सो कोट समुद्र सी खाई। जात पवनसुत बार न लाई॥ आरती...
लंका जारि असुर संहारे। सीयारामजी के काज सँवारे॥ आरती...
लक्ष्मण मूर्छित पड़े सकारे। आनि सँजीवन प्रान उबारे॥ आरती...
पैठि पताल तोरि जम-कारे। अहिरावन की भुजा उखारे॥ आरती...
बायें भुजा असुरदल मारे। दहिने भुजा संतजन तारे॥ आरती...
सुर नर मुनि आरती उतारें। जय जय जय हनुमान उचारें॥ आरती...
कञ्चन थार कपूर लौ छाई। आरती करत अंजना माई॥ आरती...
जो हनुमान की आरती गावै। बसि बैकुण्ठ परम पद पावै॥ आरती...

—: श्री हनुमत्-वन्दन :—

अतुलितबलधामं हेमशैलाभदेहं दनुजवनकृशानुं ज्ञानिनामग्रगण्यम्।
सकलगुणनिधानं वानराणामधीशं रघुपतिवरदूतं वातजातं नमामि॥

हरी दर्शन आरती संग्रह

आरती
श्री रामायणजी

आरती श्री रामायणजी की।
कीरति कलित ललित सिय-पी की॥

गावत ब्रह्मादिक मुनि नारद। बालमीक विज्ञान विशारद॥
शुक सनकादि शेष अरु शारद। बरनि पवनसुत कीरति नीकी॥ आरती...

गावत वेद पुरान अष्टदस। छओं शास्त्र सब ग्रंथन को रस॥
मुनि-मन धन सन्तन को सरबस। सार अंश सम्मत सबही की॥ आरती...

गावत सन्तत शम्भु भवानी। अरु घट सम्भव मुनि विग्यानी॥
व्यास आदि कविबर्ज बखानी। कागभुषुण्डि गरूड़ के ही की॥ आरती...

कलिमल हरनि विषय रस फीकी। सुभग सिंगार मुक्ति जुबती की॥
दलन रोग भव मूरी अमी की। तात मात सब विधि तुलसी की॥ आरती...

—: भगवान् श्रीराम-स्तुति :—

नीलाम्बुज श्यामलकोमलाँगं सीता समारो पितवाम भागम्।
पाणौ महासायक चारूचापं नमामि रामं रघुवंश नाथम्॥

—: श्रीराम-वन्दना :—

श्रीरामचन्द्र रघुपुंगव राजवर्य राजेन्द्र राम रघुनायक राघवेश।
राजाधिराज रघुनन्दन रामचन्द्र दासोऽहमद्य भवतः शरणागतोऽस्मि॥

—: श्री जानकी-वन्दन :—

उद्भवस्थितिसंहारकारिणीं क्लेशहारिणीम्।
सर्वश्रेयस्करीं सीतां नतोऽहं रामवल्लभाम्॥
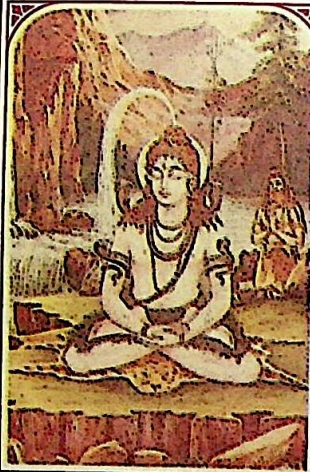
आरती श्री शिवशंकरजी

हर हर हर महादेव!

सत्य, सनातन, सुन्दर शिव सबके स्वामी ।
अविकारी अविनाशी, अज अन्तर्यामी ॥ हर हर...

आदि, अनन्त, अनामय, अकल कलाधारी ।
अमल, अरूप, अगोचर, अविचल, अघहारी ॥ हर हर...

ब्रह्मा, विष्णु, महेश्वर तुम त्रिमूर्तिधारी ।
कर्ता, भर्ता, धर्ता, तुम ही संहारी ॥ हर हर...

रक्षक, भक्षक, प्रेरक, प्रिय औढरदानी ।
साक्षी, परम अकर्ता, कर्ता अभिमानी ॥ हर हर...

मणिमय-भवन निवासी, अति भोगी रागी ।
सदा श्मशान विहारी, योगी वैरागी ॥ हर हर...

छाल-कपाल, गरल-गल, मुण्डमाल व्याली ।
चिता भस्मतन त्रिनयन, अयनमहाकाली ॥ हर हर...

प्रेत-पिशाच-सुसेवित, पीत जटाधारी ।
विवसन विकट रूपधर, रुद्र प्रलयकारी ॥ हर हर...

शुभ्र-सौम्य, सुरसरिधर, शशिधर सुखकारी ।
अतिकमनीय, शान्तिकर, शिवमुनि मन-हारी ॥ हर हर...

निर्गुण, सगुण निरञ्जन, जगमय नित्य प्रभो ।
कालरूप केवल हर! कालातीत विभो ॥ हर हर...

सत्, चित्, आनंद, रसमय, करुणामय दाता ।
प्रेम-सुधा-निधि प्रियतम, अखिल विश्व त्राता ॥ हर हर...

हम अतिदीन, दयामय! चरण-शरण दीजै ।
सब विधि निर्मल मति कर, अपना कर लीजै ॥ हर हर...

आरती श्री अम्बाजी

जय अम्बे गौरी, मैया जय श्यामा गौरी।
तुमको निशिदिन ध्यावत, हरि ब्रह्मा शिव री ॥

माँग सिंदूर विराजत टीको मृगमदको । उज्ज्वल से दोउ नयना, चन्द्र बदन नीको ॥
कनक समान कलेवर रक्ताम्बर राजे । रक्त-पुष्प गल माला, कण्ठन पर साजे ॥
केहरि वाहन राजत, खंग खप्पर धारी । सुर-नर मुनि-जन सेवत, तिनके दुख हारी ॥
कानन कुण्डल शोभित, नासाग्रे मोती । कोटिक चन्द्र दियाकर, सम राजत ज्योति ॥
शुम्भ-निशुम्भ विदारे, महिषासुर घाती । धूम्रविलोचन नैना, निशिदिन मदमाती ॥
चण्ड-मुण्ड संहारे, शोणितबीज हरे । मधु कैटभ दोउ मारे, सुर भयहीन करे ॥
ब्रह्माणी रुद्राणी, तुम कमलारानी । आगम-निगम बखानी, तुम शिव पटरानी ॥
चौंसठ योगिनि गावत, नृत्य करत भैरूं । बाजत ताल मृदंगा, और बाजत डमरू ॥
तुम ही जग की माता, तुम ही हो भरता । भक्तन की दुख हरता, सुख सम्पत्ति करता ॥
भुजा चार अति शोभित, वर-मुद्रा धारी । मनवांछित फल पावत, सेवत नर-नारी ॥
कंचन थाल विराजत, अगर कपूर बाती । मालकेतु में राजत, कोटि रतन ज्योति ॥
अम्बेजी की आरती, जो कोई नर गावे । कहत शिवानंद स्वामी, सुख-सम्पत्ति पावे ॥

—: श्री शंकर-वन्दना :—

कर्पूरगौरं करुणावतारं संसारसारं भुजगेन्द्रहारम् ।
सदा वसन्तं हृदयारविन्दे भवं भवानीसहितं नमामि॥
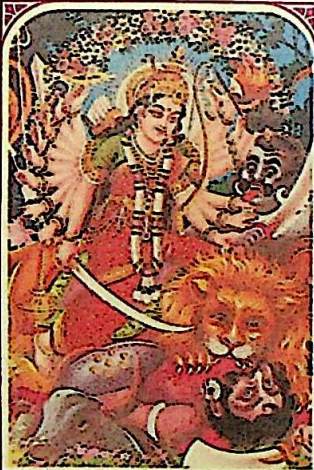
आरती श्री दुर्गाजी

अम्बे तू है जगदम्बे काली, जय दुर्गे खप्पर वाली,
तेरे ही गुण गावें भारती, ओ मैया हम सब उतारें तेरी आरती।

तेरे भक्त जनों पर माता भीर पड़ी है भारी।
दानव दल पर टूट पड़ो माँ करके सिंह सवारी॥
सौ सौ सिहों से बलशाली, है अष्ट भुजाओं वाली,
दुष्टों को तू ही ललकारती। ओ मैया...

माँ-बेटे का है इस जग में बड़ा ही निर्मल नाता।
पूत-कपूत सुने हैं पर ना माता सुनी कुमाता॥
सब पे करूणा दर्शाने वाली, अमृत बरसाने वाली,
दुखियों के दुखड़े निवारती। ओ मैया...

नहीं मांगते धन और दौलत, न चांदी न सोना।
हम तो मांगें तेरे चरणों में छोटा सा कोना॥
सबकी बिगड़ी बनाने वाली, लाज बचाने वाली,
सतियों के सत को संवारती। ओ मैया...

चरण शरण में खड़े तुम्हारी, ले पूजा की थाली।
वरद हस्त सर पर रख दो माँ संकट हरने वाली॥
माँ भर दो भक्ति रस प्याली, अष्ट भुजाओं वाली,
भक्तों के कारज तू ही सारती। ओ मैया...

—: श्री देवी-वन्दना :—

देवि प्रपन्नार्तिहरे प्रसीद प्रसीद मातर्जगतोऽखिलस्य।
प्रसीद विश्वेश्वरि पाहि विश्वं त्वमीश्वरी देवि चराचरस्य॥